Vol 6 Issue 12 Sept 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

जलालुदीन फिरोज खिलजी के शासन काल में मलिक छज्जू का विद्रोहः कारण एवम् प्रभाव (Aug – Sep 1290 ई.)

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय , फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

भारत में राजनैतिक असंतोष के कारण षडयंत्र रचने एवं विद्रोह करने की प्रवृत्ति प्राचीन काल से ही थी। लेकिन अरबों के भारत में प्रवेश करने के पश्चात मध्यकाल में इसे अत्यधिक बढावा मिला और मध्यकालीनभारत का सम्पूर्ण इतिहास भयानक षणयंत्रो एवं रक्तरंजित विद्रोहों से भर गया है। खिलजी वंश के प्रारम्भिक चरण मेंजलालुद्दीन फिरोज खिलजी की नृप सुलभ दुर्बलता के कारण मलिक छज्जू का विद्रोह (अगस्त – सितम्बर 1290 ई0) प्रथम और अन्तिम नही था,वरन यह विद्रोहों की कडी को अग्रसारित करने में सहायक अवश्य सिद्ध हुआ।

प्रस्तावना :

मलिक छज्जू का पूरा नाम अलाउद्दीन किश्ली था। यह बलबन और अमीर हबीब का भतीजा था। इसे बलबन ने अपने पिता के स्थान पर बारबक के पद पर नियुक्त किया तथा इसे "कोल" की इक्ता (जागीर) "चौगानेजर" प्राप्त हुआ।यहदानशीलता, उदारता, गेंद खेलने तथा शिकार खेलने में हिन्दुस्तान तथा खुरासान में प्रसिद्ध था।[1]

जब फिरोज खिलजीने आरिजे ममालिक की हैसियत से खिलजियों के विरूद्ध होने वाले षडयंत्र को विफल कर दिया, औरबालक कैमुर्स का राज्यारोहण कर दिया उस समय मलिक छज्जू से सुल्तान कैमुर्स के संरक्षण के पद पर कार्य करने की पेशकश जलालुद्दीन ने की थी किन्तु मलिक छज्जू ने संरक्षण का पद ठुकरा दिया था ओर अपने लिये कडा की जागीर की मॉग की थी।फिरोज ने मलिक छज्जू कोकडा की इक्ता प्रदान की थी तथा इसे बलवन के परिवार के शीघ्र बचे सभी सदस्यों को अपने साथ ले जाने की इजाजत दे दी गई थी।[2]इस प्रकार मलिक छज्जू शीघ्र ही अपने जागीर "कडा" पहुँच गया।

बलवन वंश के सर्वेसर्वा मलिक छज्जू ने अगस्त – सितम्बर 1290 ई0 (शाबान 689)[3]में कडा में विद्रोह कर दिया।

कारण

६ जलालुद्दीन का दुर्बल चरित्र, दयालुता एवं उसकी असावधानी ने मलिक छज्जू को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया इसमें नृप सुलभ शिष्टता का अभाव था।

- जलालुद्दीन की उदारता का लाभ उठाकर बहुत से जलाली अमीरों (मलिक ताजुद्दीन कूंची, मलिक मुहम्मद कुतलग खान, मलिक नुसरत सुबाह)नेपूर्व सुल्तान बलबन के भतीजे कोविद्रोह के समय सहायता देने का वचन अवश्य दिया होगा क्योकि वो पूर्व सुल्तान के भतीजे के प्रति सहानुभूति रखते थे।
- दिल्ली की जनता खिलजी वंश की स्थापना के बाद भी तुर्कों के प्रति अभी भी सहानुभूति रखती थी तथा दिल्ली की प्रजा का एक अंश बलबन के भतीजे तथा पिछले राजवंश के सर्वेसर्वा मलिक छज्जू को अभी भुला नही पायी थी, उनके हृदय में बलबन के परिवार केप्रतिअभी भी भक्ति – भावना थी।
- कडा प्रदेश की हिन्दु (रावत एवं पायक) जनतामलिक छज्जू का पूर्ण रूप से समर्थन कर रही थी ओर बलबन के वंश को गंगा के तटवर्ती प्रदेशों की हिन्दू सरदारों की व्यापक निष्ठा प्राप्त थी। क्योंकिभारी संख्या में रावत ओर राणा अपनी विख्यात पैदल सैना एवं धनुर्धरों सहित मलिक छज्जू से मिल गये थे।रावत सरदारों ने मलिक छज्जू से मित्रता का प्रतीत "पान के बीड़े" स्वीकार किये जो निष्ठा एवं मित्रता का प्रतीत होता था और उन्हें मलिक छज्जू को खिलजी वशं के शाही छत्र को नष्ट करने में सहायता देने का वचन दिया।
- अवध के राज्यकाल अमीर अली हातिम खॉ ने मलिक छज्जू को समर्थन देने का वायदा किया था क्योंकि वह भी खिलजी वशं के प्रति अभी निष्ठा कायम नही कर पाया था।

- मलिक छज्जू को कड़ा में रहते हुये यह गुप्त जानकारी प्राप्त हो गई थी कि जलालुद्दीन ने देहली में पैर भी नहीं रखा है तथा वह देहली की गणमान्य जनता से डरता है इसलिये वह अभी किलाखेड़ी के राजभवन में ही रह रहा है।
- मलिक छज्जू का विद्रोह करते समय यह विचार था कि दिल्ली पर चाढ़ई करते समय जनता यह समझेगी कि वह अपने चाचा बलबन का राज्य प्राप्त करने आ रहा है तथा जनता उसका साथ देगी क्योंकि खिलजियों का देहली पर कोई अधिकार तथा उससे कोई सन्बन्ध नही है क्योंकि जलालुद्दीन ने सुल्तान बलबन के पुत्रों से बलपूर्व उनका राज्य छीन लिया है।[4]
- शहरीयों को खिलजियों के साथ बादशाही से बड़ी आपत्ति दृष्टिगोचर होती थी वे उनको कोई महत्व नही देते थे। उस समय देहली में अनेक प्रतिष्ठित गणमान्य घराने और प्राचीन बड़े – बड़े वंश विद्यमान थे।[5]

स्वरूप

उपरोक्त कारणों से प्रभावित होकर मलिक छज्जू ने अगस्त 1290 ई0 में सुल्तान "मुगीसुद्दीन"की उपाधि एवं छत्र धारण करके अपने नाम का खुत्वा पढ़वाने लगा तथा अपने नाम के सिक्के भी ढ़लवा दिये। इस प्रकार इसने खिलजी वंश के प्रति विद्रोह का झंण्ड़ा खड़ा कर दिया। इस कार्य में अवध के राज्यपाल अमीर अली सरजानदार जो हातिम खॉ के नाम से प्रसिद्ध था ने मलिक छज्जू को अपना अविचल सहयोग प्रदान किया, कुछ अमीर तथा वह लोग जिनकों बलवन के राज्यकाल में उत्कर्ष प्राप्त हुआ था, मलिक छज्जू से मिल गए। कड़ा के आस – पास के रावत और पायक भारी संख्या में उसके झण्ड़े के नीचे एकत्रित हो गये तथा अनेक जलाली अमीर भी इसके प्रति सहानुभूति रखते थे इस प्रकार इसने एक विशाल सेना एकत्रित की और दिल्ली की और अग्रसर हुआ।[6]जैसे ही इस महान विद्रोह का समाचार देश में फैला तो दोआब और उसे आगे तैनात निष्ठावान अधिकारियों ने स्वयं को अलग – थलग आरक्षित रखते हुए पश्चिम की ओर बढ़ गये।

मलिक छज्जू अमरोहा प्रदेश की ओर राजधानी पहुॅचने के उद्देश्य से गंगा नदी के किनारे उत्तर की ओर चला और राम गंगा के किनारे – किनारे बदायूँ की ओर बढ़ा यहॉ उसके दो प्रभावशाली समर्थक "मलिक बहादुर" और अलप गाजी अपनी सेनाओं सहित उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।[7]राजधानी और उसके निकटवर्ती प्रदेशों से अपने प्रति सैनिक सहायता तथा बरनी के अनुसार अपनी "चीटियों और टिड्डियों" के समान असंख्य सेना के विश्वास पर मलिक छज्जू ने देहली की ओर बढ़ने के निश्चय किया।[8]

इस प्रकार फिर तुर्क जाति मलिक छज्जू के नेतृत्व में अपने विरोधी खिलजियों से जिनके पीछे अतीत, समाजिक सम्मान और परम्परा न थी, लड़ने चल पड़े। तुर्क शिष्टजन एकान्तिकता और जातीय गौरव का एवं खिलजी लोग विलक्षण विदेशी तथा परिवर्तित धर्मी भारतीयों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जिन्होने उस समय तक कोई निश्चित स्थान प्राप्त नही किया था।[9]

मलिक छज्जू का विद्रोह सुल्तान जलालुद्दीन की शान्तिप्रियता की कठिन परीक्षा थी। वास्तव में जलालुद्दीन की असावधानी तथा दयालुता ने यह स्थिति पैदा कर दी थी। किन्तु इस विद्रोह ने उसे क्रियाशीलता की ओर प्रवृत्त किया।

मलिक छज्जू के विद्रोहका समाचार जैसे की देहली पहुॅचा जलालुद्दीन का क्रोध सिंह के समान हो गया। उसने अपने सैनिकों को दो माह का अग्रिम वेतन एवं अपने पुत्र अर्कली खॉ को सेना की तैयारी का आदेश दिया।[10]सुल्तान ने अपने ज्येष्ठ पुत्र खाने खाना को देहली में अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया ।[11] वह जानता था कि यह मलिक छज्जू की कोकोई घृणित रणनीति नहीं है बल्कि अनुभवी फिरोज के लिये स्पष्ट चुनौती है।सुल्तान ने अपने मित्रो, सहायकों तथा खिलज़ी अमीरों, को जोकि उसके बहुत बड़े सहायक थे और एक वीर सेना जिसके राजभक्त होने का पूर्ण विश्वास था, को लेकर स्वतः विद्रोह दबाने के लिये किलाखेड़ी से निकाला तथा सेना को यमुना पार करने के बाद दो भागो में विभाजित कर दिया।[12]सेना का एक अंश अर्कली खॉ के नेतृत्व में दस बारह कोस आगे – आगे चला तथा दूसरा दल पुत्र की सेना के पीछे – पीछे स्वयं सुल्तान के नेतृत्व में आगे बढ़ा।[13]

सेना ने कोयल (अलीगढ) होते हुए बदायूँ की ओर कूच किया। जिसका स्पष्ट उद्देश्य रूहेलखण्ड से आने वाले मार्ग को पूर्णतः बन्द कर देना था। अर्कली खॉं के नेतृत्व में जाने वाले सैनिक दस्ते का मकसद सिंहासन के दावेदार का पता लगाना तथा उसे आगे बढ़ने से रोकना था। अपने पिता के आगे – आगे अमरोहा की ओर बढ़ते हुए तेजी के साथ अर्कली खॉं "कलाइवनगर" नदी वर्तमान काली नदी पर पहुॅचा।[14]शत्रु (मलिक छज्जू) पहले ही नदी के दूसरे तट पर पहुॅच चुका था। इस प्रकार अर्कली खॉं विद्रोही सेना के समक्ष नदी के दूसरे तट पर पहुॅच गया। शत्रु ने नदी की नौकाओं को पहले ही अधीन कर लिया था छज्जू की प्रारम्भिक सावधानी के बावजूद भी अर्कली खॉं काली नदी (जो उस समय बाढ पर थी) को पार करने में सफल हो गया और शत्रुओं पर टूट पड़ा।[15]यह अर्कली खॉं का एक रात्रि में छापामार युद्ध था। यह प्रारम्भिक आक्रमण (छापा) सफल हुआ और शत्रु की सेना में खलबली मच गयी। मलिक छज्जू जुबला की ओर भाग गया। अमीर खुसरों के अनुसार शिविर तोड़कर शीघ्रतापूर्ण उत्तर की ओर जोबाला की ओर कूच किया। विजय की सूचना शीघ्रता पूर्वक सुल्तान के पास पहुॅचाई गई। शाही सैनिकों ने मलिक छज्जू के शिविरों को दो दिन तक लूटा और फिर बड़ी तेजी के साथ उसके पीछे गया। उस समय मलिक छज्जू को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा। भागना असम्भव समझकर मलिक छज्जू ने अपने सैनिकों का एकत्रित किया तथा बड़े दृढ संकल्प के साथ युद्ध प्रारम्भ किया। लडाई के समय सेना के मध्य भाग का नेतृत्व अर्कली खॉं कर रहा था और उसके दो चचेरे भाई कुतलुगतिगिन और अलाउद्दीन उसकी सहायता पर थे दायां और बायां भाग मीर मुबारक और मलिक मुहम्मद के नियंत्रण में रखे गये थे।[18]

सुल्तान जलालुद्दीन फरूखाबाद के निकट भोजपुर से गंगा नदी पार कर रूहेलखण्ड की ओर बढ़ा और सिंहासन के दावेदार हिन्दू मुस्लिम समर्थकों से युद्ध प्रारम्भ किया।[19]इसी समय अर्कली खॉं तथा मलिक छज्जू के मध्य पूरे जोश के साथ युद्ध प्रारम्भ हुआ था। हजारों की संख्या में दौनों ओर से सैनिकों की मृत्यु हुई। प्रातः काल से सायंकाल तक युद्ध का निर्णय नही हो पाया दौनों सेनायें अपने – अपने शिविरों को चली गयी।[20]

रात्रि में उसे हिन्दू समर्थकों में राय भीमदेव के एक प्रतिनिधि ने सुल्तान के पीछे से अप्रत्याशित आगमन की सूचना दी। इस समाचार से मलिक छज्जू विचलित हो गया तथा उसका दिल बैठ गया।[21]उसने नगाड़ों की आवाज द्वारा यह प्रदर्शित करते हुए कि जैसे वह दूसरे दिन के युद्ध की तैयारी कर रहा है। अपने कुछ विश्वस्त अनुयायियों सहित चुपचाप शिविर छोड़कर भाग खड़ा हुआ। सुबह अर्कली खॉं

ने नदी पार करके युद्ध किया तथा सरलता से युद्ध जीत लिया भीमदेव तथा अलपगाजी मृत्यु के काल में समा गये। तथा उनके बचे हुए सैनिकों ने बिना शर्त समर्पण करके शरण ली।[22]

अर्कली खाँ भीमदेव तथा अलपगाजी को मार डालने के बाद छज्जू का पीछा करने के लिए रवाना हो गया। कुछ दिन पश्चात छज्जू भी एक दीवार से घिरे गाँव में बन्दी बना लिया गया जहाँ उसने शरण ली थी उस गाँव के मुखिया ने छज्जू को सैनिकों के हवाले कर दिया।[23]

अर्कली खाँ विजयोत्साह में मग्न बन्दियों सहित अपने पिता के साथ बदायू लौट आया। सुल्तान जलालुद्दीन शहजादे अर्कली खाँ की देदीप्यमान विजय से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे गले लगाया। सुल्तान ने अपने पुत्र को विजय के लिए बधाई दी तथा उसे मुल्तान का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। तत्पश्चात् जलालुद्दीन ने विद्रोहियों के भाग्य का फैसला करने के लिए एक भव्य दरबार का आयोजन किया।[24]जियाउद्दीन बरनी ने जलालुद्दीन के विश्वासपात्र अमीर खुसरों से जो उस समय वहाँ सुल्तान के निकट खड़ा था, सुना कि मलिक छज्जू , अमीर अली सरजानदार, मलिक तरगी के पुत्र, मलिक अलगाजी, मलिक ताजवर्द, मलिक एहजन इत्यादि जैसे मलिकों को जिनकी गर्दनें शिकंजे में थी तथा हाथ पीछे बँधे हुए थे, पूरे शरीर तथा वस्त्रों पर धूल जमी हुई थी।वस्त्र बहुत ही मैले तथा फटे हुए थे, वहाँ उपस्थित जनसमुदाय की हार्दिक इच्छा थी कि इन विद्रोहियों को पूरी जनता तथा सेना के समक्ष इसी अपमानित दशा में घुमाया जाये। इन सभी विद्रोहियों को पूरी जनता तथा सेना के समक्ष लाया गया। जैसे ही सुल्तान की नजर उनके उपर पड़ी वह बड़ा दुःखी हुआ। उसने चिल्लाकर आदेश दिया कि इन गणमान्य व्यक्तियों तथा प्रतिष्ठित अमीरों को शीघ्र ही उँटों से उतारकर हथकड़ियां तथा बेढ़ियों को खोला जाये, उन्हें नहलाया – धुलाया जाये, स्वच्छ वस्त्र पहनाये जायें तथा सुगन्धित इत्र लगाया जाये।[25]यह कहकर सुल्तान अपने शिविर में चला गया। सुल्तान जलालुद्दीन के यह वाक्य सुनकर कृतध्न विद्रोहियों के सिर लज्जा से झुक गये तथा उन्होनें यह अवश्य विचार किया होगा कि इतनी उदारता तथा सहनशील शासक के प्रति उन्होनें कितना विश्वासघात किया है? उसी दिन सुल्तान ने एक शराब की महफिल बुलायी तथा वह सभी अमीर तथा मलिक बुलाए गये जो विद्रोह में शामिल थे। उन सब से मदिरापान करने को कहा तो वे दूर ही लज्जावाश खड़े रहे तथा अपनी नजरें जमीन पर गढ़ाये रहे। उनकी किसी से भी बात करने की हिम्मत नही हुई। सुल्तान जलालुद्दीन ने उनसे बातें करना प्रारम्भ की और प्रोत्साहन तथा संतोष देने के लिये उसने कहा कि ***" तुम लोगों ने हरामखोरी नही की अपितु राजभक्ति दिखायी है क्योकि तुमने अपने स्वामी के पुत्र की ओर से युद्ध किया है।"***वहाँ उपस्थित दरबारियों को सुल्तान के इस वाक्यों ने विस्मित कर दिया।[26]सुल्तान ने उन सभी के साथ दया का व्यवहार किया और मदिरा के प्याले पिलाये, मानों वह उसके विशिष्ट अतिथि हों। मलिक अहमद चप जो कि बड़ा दूरदर्शी, नायब हाजिब और सुल्तान का सम्बन्धी होने के साथ – साथ अपनी स्पष्ट वादिता के लिये प्रसिद्ध था।वह सुल्तान को यह स्मरण दिलाने से नही चूँका कि विद्रोहियों से अत्यधिक उदारता का व्यवहार करना अच्छे शासन के सिद्धातों के प्रतिकूल है। क्योंकि अहमदचप सुल्तान से यह आशा करता था किवह उन्हें परम्परानुसार दण्ड़ देगा। अपने प्रिय स्पष्टवादी भांजे मलिक अहमदचप के प्रतिवाद के लिये जलालुद्दीन का उत्तर संक्षिप्त और सादा था। वह अत्याचार और रक्त पिपास नीति अपना कर शासन नही कर सकता और उसने कहा कि मैं एक बृद्ध मुसलमान हूँ और मुसलमानों का रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं। मेरी आयु 70 वर्ष से ज्यादा हो चुकी है। मैंने अभी एक भी मुहदी की हत्या नहीं की।[27]

संक्षिप्त में सितम्बर 1290 में विद्रोही बन्दियों को जिनमें हिंन्दू थे उन्हें हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया तथा मुसलमान विद्रोहियों को क्षमा कर दिया।[28]मलिक छज्जू को पालकी में बिठाकर मुल्तान भेज दिया गया तथा वहाँ उसके लिए प्रत्येक सुविधा की व्यवस्था की गयी सिवाय इसके कि मलिक छज्जू को अर्कली खाँ के सजग नियंत्रण मे रहना था।[29]अर्कली खाँ मुल्तान का राज्यपाल बना दिया गया। मलिक छज्जू की जगह अलाउद्दीन कड़ा का राज्यपाल नियुक्त हुआ।

प्रभाव

- सुल्तान की उदारता ने मलिकों तथा सामतों को साहसी बना दिया क्योकि मलिक छज्जू विद्रोह करने पर उसे उसके साथियों साहित मुक्त कर दिया था।
- जलालुद्दीन खिलजी के समय चोर, ड़ाकू, लूटेरे भी दण्ड से बच जाते थे क्योकि सुल्तान इन अपराधियों से पश्चाताप की शपथ लेकर अपने को सन्तुष्ट कर लेता तथा उन्हें मुक्त कर देता था।
- जलालुद्दीन के शान्त एवं उदार स्वभाव के कारण लोगो के हृदय से राजदण्ड़ के भय निकल चुका था।
- इस विद्रोह के अधिकांशतः अपराधियों को क्षमा दान देने के कारण ही आगामी विद्रोहों की नीवं रखी गयी चाहे मलिक 'ताजुद्दीन मदिरा पानोत्सव' षणयंत हो या 'सीदी माला के षणयंत्र' या कड़ा के राज्यपाल 'अली अर्थात अलाउद्दीन का षणयंत्र', यह सभी "मलिक छज्जू के विद्रोह" के अभयदान का ही परिणाम था।

निष्कर्षतः

यद्यापिपूर्व मध्यकाल के समय अधिकांशतः सुल्तानों के समय राजनैतिक विद्रोह होते रहे है परन्तु जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की उदारता एवं बृद्धावस्था ने आगामी विद्रोहों की नीव को प्रशस्त कर अमीरों एवं सामन्तों को स्वतंत्र एवं स्वच्छन्द आचरण के लिये अवश्य प्रेरित किया।

सन्दर्भ

1.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 113.
2.तारीखे मुबारकशाही – याहिया, पृ. 59.
दिल्ली सल्तनत – मौ. हबीब एवं निजामी, पृ. 274.

3.तारीखे मुबारकशाही – याहिया, पृ. 63.
4.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 181.
5."आदि तुर्क कालीन भारत" – सौ.अ.अ. रिजवी, पृ. 244.
6.तारीखे फिरोजशाही – बरनी, पृ. 181.
7.तारीखे मुबारकशाही – याहिया, पृ. 63.
8.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 7
दिल्ली सल्तनत – मौहम्मद हबीब एवं निजामी भाग – 1, पृ. 274.
9.जलालुद्दीन फिरोशाह खिलजी – प्रो शेख अब्दुर्रशीद, पृ. 7.
10. मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 8–10.
11.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 182
12. वही पृष्ठ 182.
13.हाजी उद्ददवीर के अनुसार अर्कलीखॉ को 12000 सैनिको के नेतृत्व सौपा गया, जफरूलवाली – पृ. 755, तारीखे फिरोशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 182.
14.बरनी इसे आबकलायब नगर कहता है। अमीर खुसरो, बदायुनी और याहिया इसे रहब नदी कहते है सम्भवतः यह काली नदी या नहर है जो कन्नौज के पास गंगा से मिलती है।
15.मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 12.
16.वही, पृ. 13.
17.वही, पृ. 13.
18.वही, पृ. 13. कुतुलुगतिगिन अलमारत बेग से छोटा था फुतूहस्सलातीन पृ. 220
19.दिल्ली सल्तनत – मौहम्मद हबीब एवं निजामी, पृ. 275
20.मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 16.
21.दिल्ली सल्तनत – मौहम्मद हबीब एवं निजामी, पृ. 275
तारीखे मुबारकशाही में भीमदेव का नाम वीरमदेव कोटाला है।
22.मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 20.
23.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 182.
24.मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 22
25.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 183
26.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 184
27.वही, पृ. 185
28.मिफ्ताहुल फुतूह – अमीर खुसरो, पृ. 22
29.तारीखे फिरोजशाही – जियाउद्दीन बरनी, पृ. 184

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद ––– डॉ. सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
2.फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी, अनु. आग मेंहदी हुसैन, आगरा 1938.
3.तारीखे मुबारकशाही : याहिया सरहिन्दी, अनु. के.के. बसु।
4.मिफ्ताहुल फुतूह : अमीर खुसरा, सम्पादित एस.ए. रशीद अल्गिढ़।
5.दिल्ली सल्तनत : मौ. हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
6.जलालुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशदि।
7.आदि तुर्क कालीन भारत : सौ.अ.अ. रिजवी।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच. के. एल. कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय , फिरोजपुर (पंजाब)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com